डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 15.09.2020

व्याख्यान संख्या-58 (कुल सं. 94)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

गिरि ते ऊँचे रसिक मन बूड़े जहाँ हजार।

वहै सदा पसु नरन कहँ प्रेम पयोधि पगार।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग प्रेम की महानता, विशालता एवं गंभीरता के साथ-साथ वास्तविक रसिक जन की उच्चता एवं अरसिक जनों की निम्नता के वर्णन का है। कवि के अनुसार समुद्र के समान विशाल प्रेम भी और अरसिकों के लिए एक साधारण गड्ढे के समान अर्थात् भोग-विलास की वस्तु मात्र है। कवि का कहना है कि जिस प्रेम रूपी समुद्र में पर्वत से भी अधिक ऊँचे हजारों रसिकों के मन डूब चुके हैं, वही प्रेम रूपी समुद्र पशुतुल्य अज्ञानी नरों को उथले पानी वाले गड्ढे के समान जान पड़ता है।

प्रस्तुत प्रसंग में कवि प्रेम की विशालता एवं गंभीरता के भाव को अक्षुण्ण रखते हुए यह कहना चाहते हैं कि रसिक जन अर्थात वास्तविक प्रेमी का मन औदात्य युक्त होता है, पर्वत से भी ऊँचा होता है। तात्पर्य यह है कि उनका भाव विशाल एवं वैचारिकता उन्नत होती है। ऐसे ही लोग प्रेम की गंभीरता को समझ पाते हैं और उसमें निमग्न हो पाते हैं और उनकी निमग्नता ऐसी होती है कि वे कभी न तो तृप्त होते हैं और न ही उससे निकलना चाहते हैं। यही प्रेम और प्रेमी दोनों की विशेषता है, उदारता है और गंभीरता है। परंतु, जो प्रेम को उथले पानी के गड्ढे के समान समझते हैं, उनके लिए तो वह भोग-विलास के साधन तक सीमित है। उनके लिए इससे अधिक उसका कोई महत्व नहीं। ऐसे लोगों को कवि पशु तुल्य कहते हैं।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे में 'पगार' का अर्थ थोड़े पानी वाली उथली नदी अथवा छोटा उथला गड्ढा है जिसमें केवल पैर डूबने लायक ही पानी हो।

प्रस्तुत दोहे में रूपक अलंकार है।